पाठ — 13

आलसीराम

3P6NRJ

– श्री नारायण लाल परमार

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री नारायण लाल परमार की प्रस्तुत लोककथा एक आलसी व्यक्ति के हृदय परिवर्तन की कहानी है। कुएँ में डुबकियाँ लगाने का दंड भुगत लेने पर आलसीराम सदा के लिए कर्मठ बन जाता है। कथा में आए पात्रों के नामों, ग्राम्य शब्दों तथा लोकगीत की कड़ियों के समावेश से ग्राम्य जीवन का चित्र निखर उठा है।

अंगद उसका नाम था। 'यथा नाम तथा गुण' वाली कहावत उस पर पूरे सौ पैसे ठीक उतरती थी। जहाँ वह बैठ जाता, फिर उठने का नाम न लेता। न घर की चिंता, न खाने–पीने की। बेचारी पत्नी गाँव का कूटना–पीसना करके किसी तरह बच्चों का पेट पालती और अपने पति की राह देखा करती। अंगद कभी घर जाता, कभी किसी के चौरे पर ही सोया रहता।

लोगों को आश्चर्य होता यह देखकर कि गाँव का यह स्वस्थ–प्रसन्न युवक इतना आलसी क्यों है ? बात किसी की समझ में न आती। कभी कोई पड़ोसी उसकी पत्नी से कहता कि अब यदि घर आए तो उसे भोजन न देना। कभी उसके लिए दरवाजा बंद रखने की तरकीब की जाती, परंतु अंगद पर उसका भी कुछ असर न होता। न वह जेठ में सूखता और न भादों में हरा होता। किसी ने उसे काम पर बुलाया तो ठीक और न बुलाया तो ठीक। न किसी से राम–रमौवल, न किसी से दुश्मनी। बस अंगद , अंगद ही था।

धीरे से एक दिन परऊ ठेठवार ने कहा कि अंगद तो चोर है। कल रात उसकी बाड़ी में कुँदरू चुराने आया था। बात पर किसी को विश्वास नहीं हुआ। अंगद की घरवाली से पूछा गया, तो पता चला कि वह पिछले तीन दिनों से घर नहीं आया। बेचारे ठेठवार की रुसवाई हुई और बस।

परंतु अब अंगद के पीछे काफी नज़रें लगी होतीं। लोग सोचते कि यह प्रायः घर नहीं जाता। खाने के लिए कभी–कभार काम के एवज में कोई कुछ दे देता है, परंतु उतने से ही इस जवान शरीर का पोषण भला कैसे हो सकता है ? परंतु अंगद था कि राग–द्वेष से परे जिए चला जा रहा था।

भादों की रात थी। पूर्णमासी थी, परंतु बादलों के कारण धुप अँधियारी छाई हुई थी। कोचरू पटेल अपनी बाड़ी की रखवाली कर रहा था कि सहसा उसे आवाज़ सुनाई पड़ी–

खीरा रे, भई खीरा, बड़ सुग्घर रुख हीरा।
खाँव का दू–चार, खा न गा हजार।

उसके बाद कुछ खीरे तोड़कर खाए गए और फिर सन्नाटा छा गया। उपर्युक्त कथन का आशय यह था कि ओ खीरे के अनमोल पेड़ ! मैं दो–चार खा लूँ क्या ? (और क्षणिक अंतराल से वही आवाज़ फिर गूँजी कि एक क्या हजार फल खा लो न।)

सुनकर कोचरू पटेल दंग रह गया। पहले सोचा कि कहीं भूत–प्रेत न हो। बाहर निकलकर ललकारने की हिम्मत न हुई और खीरे खानेवाला खाकर चला गया। प्रातः जब उन्होंने गाँव के लोगों से इस बात की चर्चा की तो किसी ने कहा कि हो–न–हो सपना देखा होगा। और फिर उस गाँव में तथा आसपास कोई–न–कोई ऐसा ही सपना कभी–कभी देखने लगा।

माघ आ गया। कछार में कलिंदर लगाए गए। रखवाली होने लगी। एक रात को महँगू ने अपनी बाड़ी में सुना–

कलिंदर रे, भई कलिंदर, पाके हवस तैं सुंदर,
खाँव का दू–चार,खान न गा हजार।

(ओ भई कलिंदर, तुम सुंदर हो, पक चुके हो, खा लूँ क्या दो–चार ? एक क्या खाओ न हजार।)

और उसके बाद दो–चार कलिंदर तोड़कर भागने की आवाज़। इस घटना ने अंगद को चोर सिद्ध कर दिया। बेचारा ! गाँव में पंचों की बैठक हुई। आखिर इस अंगद को क्या सज़ा दी जाए ? दिखने में तो यह चोर नहीं दिखता। आखिर पंच साब ने पूछा अंगद से –

''तुमने चोरी की है या नहीं ?''

''मैंने तो पूछकर ही फल तोड़े थे'' – अंगद ने कहा।

''किससे पूछा था ?''

''पेड़ से'' - अंगद ने कहा।

''पेड़ भी बोलता है क्या ?''

अंगद ने इसका कोई जवाब न दिया।

काफी सोच–विचार के बाद अंगद की सज़ा तय हुई जो गुप्त रखी गई। दूसरे दिन कोचरू पटेल की बाड़ी में गाँव के लोग इकट्ठे हुए। अंगद को एक रस्से से बाँधा गया और आहिस्ते से कुएँ में उतारा गया। जब अंगद पानी की सतह पर पहुँचा तो ऊपर से एक ने आवाज़ दी–

कुआँ रे भई कुआँ, तोर नाम ले काँपे रुआँ।
डुबकनियाँ खवाओं का दू–चार, खवा न गा हजार।

(ओ भई कुआँ, तुम्हारे नाम से ही रोएँ काँप जाते हैं। दो चार डुबकियाँ खिलाऊँ क्या ? दो–चार क्या हजार खिलाओ न !)

और उसके बाद अंगद को दो–चार डुबकियाँ खिलाई गईं और पूछा गया–क्यों अंगद अब जी भरा या नहीं ? अंगद ने क्षमा–प्रार्थना की। उसे ऊपर लाया गया। लोग खूब हँसे। अंगद चुप। शर्म से उसने सिर नीचा कर लिया।

फिर तो अंगद काम में जुटा, सो जुट ही गया। पत्नी खुश, बच्चे खुश और सारा गाँव खुश। परंतु अब भी अंगद 'आलसीराम' के नाम से पुकारा जाता, जबकि वह रात-दिन काम में लगा रहता। अंगद को अपने इस नाम की भी परवाह नहीं थी। मानों वह अपने भूतकाल को भूल गया था और जुट गया था स्वर्ग बनाने में - अपने गाँव को, अपनी धरती को।

शब्दार्थ :– **तरकीब**–उपाय, **रुसवाई**–अपमान, **एवज**–बदले में, **राग–द्वेष** –ईर्ष्या, डाह, **आहिस्ते**–धीरे, **परवाह**–चिंता, **भूतकाल**–बीता हुआ कल।

अभ्यास

पाठ से

1. अंगद का नाम आलसीराम क्यों पड़ा?
2. अंगद की पत्नी अपने बच्चों का पालन–पोषण कैसे करती थी?
3. अंगद को बदलने के लिए उसकी पत्नी ने कौन–कौन सी तरकीबें अपनाई?
4. कोचरू पटेल के खेत में कौन–सी घटना घटी?
5. ठेठवार की बातों का लोगों ने विश्वास क्यों नहीं किया?
6. किस घटना ने अंगद को चोर सिद्ध कर दिया?
7. पंचों ने अंगद को क्या सज़ा दी?
8. सजा मिलने के बाद अंगद के जीवन में क्या बदलाव हुआ?
9. **निम्नलिखित कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए।**
   - **क. अंगद अंगद ही था।**
   - **ख. अंगद था कि राग–द्वेष से परे जिए चला जा रहा था।**
   - **ग. वह भूतकाल को भूल गया और जुट गया था स्वर्ग बनाने में - अपने गाँव को, अपनी धरती को।**
   - **घ. अंगद के पीछे काफी नज़रें लगी होतीं।**

पाठ से आगे

3PPFUU

1. अंगद की पत्नी बच्चों की देखभाल करती थी। अपने परिवार व बच्चों की अकेले देखभाल करने वाली महिलाओं को किन–किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है? अपने घर तथा आस–पास रहने वाली माताओं–बहनों से इस समस्या पर बातचीत कर लिखिए।
2. आलसी व्यक्ति अपने परिवार व समाज पर किस प्रकार बोझ होता है, साथियों से चर्चा करके लिखिए।
3. अंगद द्वारा काम करना प्रारंभ करने से उसके परिवार में क्या परिवर्तन आए होंगे?
4. अंगद की सजा को गुप्त रखने के क्या कारण होंगे?

भाषा से

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**
   पेट पालना, राह देखना, दंग रह जाना, सिर नीचा करना।
2. **इस लोककथा में दो लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है - 'यथा नाम तथा गुण' और 'न जेठ में सूखे, न भादों में हरे' इनका अर्थ लिखिए और उचित प्रसंगों में इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

3. नीचे लिखे शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।
राग, अँधियारी, मोल, स्वर्ग, वर्तमान।

3PFJT7

4. 'खेद' को पैदा करने वाले के लिए 'खेदजनक' शब्द का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार नीति से युक्त को नीतियुक्त, बुद्धि से हीन को बुद्धिहीन, राजा का दरबार को राजदरबार, कार्य में परायण को कार्यपरायण लिखा जाता है। इस तरह से बने पद सामासिक पद कहलाते हैं।

नीचे लिखे सामासिक शब्दों का विग्रह कीजिए।

ध्यानमग्न, स्नानगृह, धर्मशाला, भूतकाल, विश्रामगृह, संसदभवन, मर्यादाहीन, भाग्यहीन, मंदभाग्य।

5. '**श्रम** का **महत्ता' विषय पर दस वाक्य लिखिए। इस पाठ से आपको क्या संदेश मिलता है ?**
6. **'आलसीराम' लोक-कथा का सारांश पन्द्रह वाक्यों में लिखिए।**

योग्यता विस्तार

3PYBWH

1. साल के बारह महीनों के हिन्दी नाम लिखिए।
2. पाठ में दी गई कविता के समान ही अन्य कविता बनाइए।
3. पूर्णमासी व अमावस्या के बारे में अपने घर के बड़ों से पूछकर उनके बारे में लिखिए।
4. आपने अपने बड़ों से कोई न कोई लोक कथा जरूर सुनी होगी, उसे लिखिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।
5. अपने क्षेत्र में प्रचलित लोकगीतों का संकलन तैयार कीजिए।